980505 - A1

विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका में मुख पृष्ठ पर कोड नं. अवश्य लिखें।

Class - IX कक्षा - IX

> HINDI हिन्दी

(Course B)

(पाठ्यक्रम ब)

निर्धारित समय : 3 घंटे] [अधिकतम अंक : 80

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 10 हैं।
- प्रश्न-पत्र में बाएँ हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 18 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। इस अविध के दौरान छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

निर्देश :

- (i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं क, ख, ग और घ।
- (ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- (iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

1 P.T.O.

खंड-'क'

5

अपठित काव्यांश :

1.

•	अभावता काञ्चारा .			J
	''मैं तुम्हारी मौन करूणा का सहारा चाहता हूँ ।			
	जानता हूँ ,इस जगत में,			
	फूल की है आयु कितनी			
	और यो तन की उभरती,			
	साँस में है वायु कितनी ।			
	इसलिए आकाश का विस्तार,			
	सारा चाहता हूँ ।			
	मैं तुम्हारी मौन करूणा का सहारा चाहता हूँ ।			
	प्रश्न चिन्हों में उठी हैं ,			
	भाग्य सागर की हिलोरें ,			
	आँसुओं से रहित होंगी			
	क्या नयन की निमत कोरें ?			
	जो तुम्हें कर दें द्रवित			
	वह अश्रुधारा चाहता हूँ ।			
	मैं तुम्हारी मौन करूणा का सहारा चाहता हूँ।			
	जोड़कर कण-कण कृपण			
	आकाश के तारे सजाए ।			
	जो कि उज्ज्वल है सही ,			
	पर क्या किसी के काम आए ?			
	प्राण ! मैं तो मार्गदर्शक			
	एक तारा चाहता हूँ ।			
	में तुम्हारी मौन करूणा का सहारा चाहता हूँ ।			
	यह उठा कैसा प्रभंजन			
	जुड़ गई जैसे दिशाएँ ।			
	एक तरणी , एक नाविक			
	और कितनी आपदाएँ ?			
	क्या कहूँ मँझधार में भी			
	में किनारा चाहता हूँ ।			
	उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों	के नी	त्रे दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प छाँटकर	
	लिखिए -			
	(क) कवि किसकी करूणा का सहारा चाहता है	?		1
	(i) धनी लोगों की	(ii)	मित्रों की	
	(iii) ईश्वर की	(iv)	परिवार के लोगों की	

980505 - A1 2

(ख)	आका	श को कंजूस क्यों कहा गया ?				1		
	(i) आकाश में अनेक तारे हैं							
	(ii)	आकाश के तारे टिमटिमाते रहते हैं						
	(iii)	आकाश द्वारा अनगिनत तारे एकत्रित करने	पर भी	वे किर	ती का मार्गदर्शन नहीं करते			
	(iv)	आकाश ने कण – कण करके तारों का जो	ड़ा है					
(ग)	कवि	अश्रुओं की धारा क्यों बहाना चाहता है ?				1		
	(i)	लोगों की सहानुभूति बटोरने के लिए		(ii)	प्रभु को द्रवित करने के लिए			
	(iii)	सगे संबंधियों से सहायता प्राप्त करने के लि	ए	(iv)	अपना दु:ख दुनिया को दिखाने के लिए			
(ঘ)	मनुष्य	। ईश्वर को कब याद करता है ?				1		
	(i)	सुख के दिनों में	(ii)	दुख र	के दिनों में			
	(iii)	सफल हो जाने पर	(iv)	मँझध	ार में फँस जाने पर			
(ङ)	फूल	की आयु का उल्लेख किसके संदर्भ में किया	गया है	?		1		
	(i)	लंबी आयु	(ii)		र्षक वस्तु			
	(iii)	जवानी	(iv)	मुरझा	ने के			
अपटि	त का	व्यांश :				5		
थका	हारा सो	चता मन सोचता मन ।						
उलझ	ती ही ज	ना रही है एक उलझन ।						
अंधेरे	में अंधे	रे से कब तक लड़ते रहें ।						
सामने	जो दि	ख रहा है , वह सच्चाई भी कहाँ ।						
भीड़	अंधों क	ी खड़ी खुश रेवड़ी खाती						
अंधेरों	के इश	गरों पर नाचती–गाती ।						
थका व	हारा सो	चता मन - सोचता रहा मन ।						
भूखी	प्यासी	कानाफूसी दे उठी दस्तक						
अंधा	बन जा	झुका दे तम-व्दार पर मस्तक।						
रेवडी	की बाँ	र्ट में तू रेवडी बन जा						

2.

तिमिर के दरबार में दरबान-सा तन जा थका हारा , उठा गर्दन - जूझता मन दूर उलझन , दूर उलझन दूर उलझन। चल खड़ा हो पैर में यदि लग गई ठोकर खड़ा हो संघर्ष में फिर रोशनी होकर। मृत्यु भी वरदान है संघर्ष में प्यारे सत्य के संघर्ष में क्यों रोशनी हारे। देखते ही देखते तम तोड़ता है दम

और सूरज की तरह हम ठोंकते हैं खम ।

(m)	असफलताओं के कारण थका हारा मन किस उलझन में था ?					
	(i)	गलत मार्ग पर चलने की चाह	(ii)	न जाने सफलता कब मिलेगी		
	(iii)	न जाने क्या ठीक है ?	(iv)	इन अंधेरों से जीता नहीं जा सकेगा		
(碅)	भीड़	अंधों की खड़ी रेवड़ी खाती का क्या	आशय	है ?	1	
	(i)	अंधे लोग मौज कर रहे हैं	(ii)	रेवड़ी हमेशा अंधों को मिलती है		
	(iii)	अंधा व्यक्ति इसी में खुश है	(iv)	भ्रष्टाचारी मौज कर रहे हैं		
(ग)	अँधेरा	किसका प्रतीक है ?			1	
	(i)	रात	(ii)	भ्रष्ट व्यवस्था		
	(iii)	निराशा	(iv)	उदासीनता		
(ঘ)	मृत्यु व	त्ररदान है -			1	
	(i)	आलसी व्यक्ति के लिए	(ii)	कायर के लिए		
	(iii)	सैनिक के लिए	(iv)	संघर्षशील व्यक्ति के लिए		
(ङ)	तिमिर	शब्द का विलोम शब्द है -			1	
	(i)	अँधेरा	(ii)	उजाला		
	(iii)	सूर्य की रोशनी	(iv)	रात		
~ ~~		<u></u>			_	
अपाठ	त गद्य	•			5	
वाणी प्राणी की पहचान है। जिस प्रकार कौए और कोयल की पहचान उनकी वाणी से हो जाती है, उसी प्रकार किसी व्यक्ति के आचार – व्यवहार तथा स्वभाव की परख उसकी वाणी व्दारा हो जाती है। मीठी वाणी दूसरों को वश में करने की औषि है। जब हम वाणी का श्रवण करते हैं, तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है। सज्जन सर्वदा मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, जबिक दुर्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है। मीठी वाणी शत्रु को मित्र बना सकती है, निराश व्यक्तियों में आशा उत्साह का संचार कर सकती है। कटु वाणी हृदय में शूल						
दूसरों सज्जन शत्रु क	को वश सर्वदा ो मित्र	। में करने की औषधि है । जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं , ज बना सकती है , निराश व्यक्तियों में अ	ाणी का बकि दु ाशा उत्स	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर	को वश सर्वदा ो मित्र ह चुभत	। में करने की औषधि है । जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं , ज बना सकती है , निराश व्यक्तियों में अ गी है । इससे अपने भी पराए हो जाते है	ाणी का बिक दु ाशा उत्स हैं । इतः	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु	को वश् सर्वदा ो मित्र ह चुभर द्ध का	। में करने की औषधि है । जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं , ज बना सकती है , निराश व्यक्तियों में अ ही है । इससे अपने भी पराए हो जाते है कारण भी बन जाती है । द्रौपदी के क	ाणी का बिकि दु ाशा उत्स् हैं । इतः टु वचन	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ता ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति	को वश् सर्वदा ो मित्र ह चुभत द्ध का ने अप	। में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हे कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म	ाणी का बिकि दु ाशा उत्स् हैं । इतः टु वचन	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर व	को वश् सर्वदा ो मित्र ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी अ	। में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म ामृत के समान काम करती है।	ाणी का बिक दु ाशा उत्स् हैं । इतन् टु वचन् धुर वच	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया।		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर व उपर्युक्त	को वश् सर्वदा ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी अ	। में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हे कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म	ाणी का बिक दु ाशा उत्स् हैं । इतन् टु वचन् धुर वच	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया।	1	
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर व उपर्युक्त	को वश् सर्वदा ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी अ	। में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म तमृत के समान काम करती है। हा को पढ़कर सही विकल्प को चु	ाणी का बिक दु ाशा उत्स् हैं । इतन् टु वचन् धुर वच	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया।	1	
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर व उपर्युक्त	को वश् सर्वदा हे चुभत द्ध का ने अप त्राणी अ प्राणी (i)	ा में करने की औषिध है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म तमृत के समान काम करती है। हा को पढ़कर सही विकल्प को चु की पहचान किससे होती है?	ाणी का बिक दु ाशा उत्प हैं । इत टु वचन धुर वच नकर वि	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्ज़नों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि म महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया।	1	
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर उ उपर्युक्त (क)	को वश् सर्वदा ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी अ ह गद्यां प्राणी (i)	ा में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म तमृत के समान काम करती है। हा को पढ़कर सही विकल्प को चु की पहचान किससे होती है? कपडों से	ाणी का बिक दु ाशा उत्स् हैं । इत टु वचन धुर वच नकर ि (ii)	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया। लिखिए –	1	
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर उ उपर्युक्त (क)	को वश् सर्वदा ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी अ ह गद्यां प्राणी (i)	ा में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म तमृत के समान काम करती है। हिंश को पढ़कर सही विकल्प को चु की पहचान किससे होती है? कपडों से वाणी से	ाणी का बिक दु ाशा उत्स् हैं । इतन् दु वचन् धुर वच नकर ि (ii) (iv)	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया। लिखिए –		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर उ उपर्युक्त (क)	को वश् सर्वदा हे चुभत द्ध का ने अप त्राणी (i) (iii) दुर्जनों (i)	ा में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म समृत के समान काम करती है। हा को पढ़कर सही विकल्प को चु की पहचान किससे होती है? कपडों से की वाणी होती है –	ाणी का बिक दु ाशा उत्स् हैं । इतन् दु वचन् धुर वच नकर ि (ii) (iv)	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । र्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि म महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया। लिखिए – व्यवहार से चाल से		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर उ उपर्युक्त (क)	को वश् सर्वदा ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी (ii) (iii) दुर्जनों (i)	ा में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म तमृत के समान काम करती है। हिंश को पढ़कर सही विकल्प को चु की पहचान किससे होती है? कपडों से वाणी से की वाणी होती है – मीठी	ाणी का बिक दु । शा उत्स् हैं । इतः दु वचः धुर वच नकर ि (ii) (iv)	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । जिनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया। लिखए – व्यवहार से चाल से कटु व कर्कश कटु व कर्कश		
दूसरों सज्जन शत्रु के की तर बड़े यु व्यक्ति मधुर र उपर्युक्त (क)	को वश् सर्वदा ह चुभत द्ध का ने अप त्राणी (ii) (iii) दुर्जनों (i)	ा में करने की औषधि है। जब हम व मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, ज बना सकती है, निराश व्यक्तियों में अ ती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के क नी वाणी को वश में कर लिया और म तमृत के समान काम करती है। हिंश को पढ़कर सही विकल्प को चुं की पहचान किससे होती है? कपडों से वाणी से की वाणी होती है- मीठी	ाणी का बिक दु । शा उत्स् हैं । इतः दु वचः धुर वच नकर ि (ii) (iv)	श्रवण करते हैं , तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है । जिनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है । मीठी वाणी साह का संचार कर सकती है । कटु वाणी हृदय में शूल ना ही नहीं , कटु वाणी लड़ाई – झगड़ों , यहाँ तक कि महाभारत का कारण बनें, ऐसा कहा जाता है । जिस नों का प्रयोग सीख लिया , उसने मानों सब पा लिया। लिखए – व्यवहार से चाल से कटु व कर्कश कटु व कर्कश	1	

3.

(ঘ)	हमारा	चित्त कैसी वाणी के श्रवण से प्रसन्न	हो जात	ा है ?	1
	(i)	मधुर वाणी के	(ii)	दुर्जनों के	
	(iii)	जोशीली वाणी के	(iv)	अहंकारपूर्ण वाणी के	
(ङ)	शीर्षव	न लिखें-			1
	(i)	कटु वाणी	(ii)	मधुर वाणी	
	(iii)	मनुष्य	(iv)	वाणी	
अपि	उत गद्य				5
	-			हमारे प्राचीन ऋषियों ने शतायु होने की किंतु कर्म करते	
-				न कितने ही भारतीय युवकों ने कर्मशक्ति के बल पर माधुनिक युग में भारत जैसे विशाल जनतंत्र की स्थापना	
_				के ही प्रतिरूप थे । दूसरी ओर इतिहास उन सम्राटों को	
				ग्हान् साम्राज्य नष्ट हो गए । वेद , उपनिषद, कुरान,	
				तब्धियाँ हैं । आधुनिक ज्ञान - विज्ञान की गौरव गरिमा	
				ार अपनी हर साँस समर्पित कर दी । विज्ञान कर्म का	
		•		येक व्यक्ति अथवा जाति कर्म – शक्ति का परिचय देती	
	-	ष्टे कर्मरत है। छोटे से छोटा प्राणी भी			
•		iश के आधार पर सही विकल्पों क 	•	•	_
(क)	_	नेक ज्ञान – विज्ञान के विकास में कि			1
	(i)	साधकों तंत्र-मंत्र विद्या का	` '		
(\)	` ,	वैज्ञानिकों की इच्छा शक्ति का	` '		
(碅)		उपनिषद , कुरान , बाइबिल आदि ग्र			1
	(i)	ऋषियों की	(ii)		
(-)	` ′	कर्मवान मनीषियों की	, ,	प्रतिभाशाली रचनाकारों की	
(ग)		नेहरू, पटेल आदि नेताओं ने कर्म क	_		1
	(i)	भारत देश की	(ii)	भारत सरकार की	
(-)	(iii)	भारतीय गणतंत्र की	(iv)	भारतीय लोकतंत्र की	_
(घ)		पैर हिलाना' का आशय है–	(**)		1
	(i)	होशपूर्वक कर्म करना	(ii)	व्यायाम करना	
/ >	` /	कुछ न कुछ करना	(iv)	गति में बने रहना	_
(ङ)		द्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -	/···\		1
	(i)	कर्म में विकास	(ii)	संसार एक कर्मक्षेत्र	
	(iii)	कर्म की आवश्यकता	(iv)	अकर्मण्यता एक पाप	

4.

खंड-'ख'

5.	(i)	त्रिभुज शब्द का सही वर्ण विच्छेद है-			1
	(-)	(क) त्र्+अ+भ्+उ+ज्+अ	(평)	त +र + इ + भ + उ + ज +अ	
		(ग) त् +र् +ई + भ् + उ + ज् +अ		·	
	(ii)	'डंडा' शब्द का वर्ण विच्छेद है –	` ,		1
	()	(क) ड्+ अं + ड् + आ	(ख)	ड् + न् + ड् + अ	
		(ग) इ+अ+न्+इ+अ		इ + न + अ + इ + अ	
	(iii)	'क्रोध' शब्द का वर्ण विच्छेद है –		`	1
	, ,	(क) क् + र् + ओ + ध् + आ	(碅)	क्र + ओ + ध् + अ	
		(ग) क् + र् + ओ + ध् + अ	(ঘ)	को + र् + ध् + अ	
	(iv)	शुद्ध वर्तनी वाला शब्द छाँटिए -			1
		(क) मानशिक	(평)	मानसिक	
		(ग) मानसीक	(ঘ)	मानशीक	
6.	(i)	नीचे दिए गए शब्दों में से ही सही अनुनासि			1
		(क) कुवांरा		कुँवारा	
		(ग) कूंवारा	(ঘ)	कुन्वारा	
	(ii)	सही नुक्ता वाले शब्द को छाँटिए -			1
		(क) ज़िंदा	, ,	डिवीजन	
		(ग) जनाना		जुल्म	
	(iii)	'अनुशासन' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल			1
		(क) अनु + शासन		अन + शासन	
		(ग) अनुशा + सन	(ঘ)	अ + शासन	
	(iv)	पुनर्जन्म में प्रयुक्त उपसर्ग है -		·	1
		(क) पुन	(碅)	•	
		(ग) पुनर्	(ঘ)	पुन:	
7.	(i)	'दयालु' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है -			1
	()	(क) आलू	(ख)	आलु	
		(ग) आ		अलू	
	(ii)	'लुहारिन' शब्द में मूल शब्द व प्रत्यय है -		•	1
	` /	(क) लुहा + रिन		लुहारी + न	
		(ग) लुहार +ईन		लुहार +इन	
		~	•	-	

	(iii)	'इच्छा' शब्द का पर्यायवाची नहीं है –		1
	()	(क) मनोरथ	(ख) मनोकामना	
		(ग) चाह	(घ) जिज्ञासु	
	(iv)	आभूषण शब्द का पर्यायवाची नहीं है -	<u> </u>	1
	()	् (क) अलंकार	(ख) मनुष्य	
		(ग) गहना	(घ) जेवर	
8.	(i)	'पंडित' शब्द का विलोम है –		1
		(क) विद्वान	(ख) मूर्ख	
		(ग) बुद्धिमान	(घ) चतुर	
	(ii)	'निद्रा'शब्द का विलोम नहीं है–		1
		(क) जागरण	(ख) जागना	
		(ग) जाग्रत	(घ) नींद	
	(iii)	'प्रकृति' शब्द के अनेकार्थक रूप हैं-		1
		(क) कुदरत , स्वभाव	(ख) स्वभाव , मुद्रा	
		(ग) कुदरत , मान	(घ) कुदरत , दृश्य	
	(iv)	राज शब्द के अनेकार्थक नहीं हैं -		1
		(क) नाम	(ख) अधिकार	
		(ग) राज्य	(घ) रहस्य	
9.	(i)	जो कर्म न करता हो –		1
9.	(1)	(क) कर्मठ	(ख) कर्मवीर	1
		(ग) निष्काम	(घ) अकर्मण्य	
	(ii)	जो उपकार को न मानता हो-	(4) 5147774	1
	(11)	(क) कृतज्ञ	(ख) परोपकारी	1
		(ग) कृतघ्न (ग) कृतघ्न	(घ) अनुपकारी	
	(iii)	(१) भृताका दिए गए मुहावरे से संबंधित अर्थ विकल्पों	_	1
	(111)	'गड़े मुर्दे उखाड़ना'	THE SICE AT THE	1
			(ख) गर्व से फूल उठना	
			(घ) पुरानी बातें दोहराना	
	(iv)	तुम ने इतनी सी बात को लेकर तिल		1
	(-1)		····· (ख) का पहाड़ बना दिया	_
		(ग) का ताड़ बना दिया	(घ) का मिल बना दिया	
			/ ·/ · · · · · · · · · · · · · · · · ·	

खंड-'ग'

0.			का <mark>व्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्त</mark> टे'राम नाम रट लागी ।	र दिए	गए विकल्पों में से छाँट कर लिखिए -	5
		-		- 1		
	•		। चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समा			
	•	•	यन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद - चको 			
	-	-	। दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती 			
	_	_	मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा	ı		
	_	_	स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।	0 3 3	0.0	
	(i)		ने भगवान और भक्त की तुलना किन-किन			1
			चंदन और पानी	, ,	चंद्र और चकोर	
		` ′	दीपक और बाती	(ঘ)	उपर्युक्त सभी	
	(ii)	चकोर	र नाम है -			1
		(क)	चन्द्रमा का	(碅)	पक्षी का	
		(ग)	रात का	(ঘ)	जंगल का	
	(iii)	उपरोत्त	क्त पद में कौन सी भाषा का प्रयोग किया गया	है ?		1
		(क)	खड़ी बोली	(碅)	भोजपुरी	
		(ग)	অ ত	(ঘ)	मैथिली	
	(iv)	सुहाग	ा काम आता है –			1
	, ,	(क)	गहने बनाने के लिए	(碅)	सोने को चमकाने के लिए	
		(ग)	गहने जोड़ने के लिए	(ঘ)	खाने के लिए	
	(v)	रैदास	किसकी भिकत करते हैं?			1
	` /	(क)	राम	(碅)	कृष्ण	
		, ,	निराकार प्रभु		विष्णु की	
		, ,	ु अथवा	` ,	3	
	मसज़ि	ाद भी	आदमी ने बनाई है यां मियां			
			मी ही इमाम और खुतबाख्वाँ			
			मी ही कुरान और नमाज़या			
			ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ			
			ड़ता है सो है वो भी आदमी			
	(i)		ख्याँ का अर्थ है-			1
	(1)	-	नमाज़ पढ़ने वाला	(ख)	कुरान का अर्थ बताने वाला	_
			मसज़िद में रहने वाला		ईमानदार व सदाचारी व्यक्ति	
	(ii)		काव्यांश में अभिव्यक्त व्यंग्य बताइए-	(7)	र्वाप्तर च रायाचारा ज्यास	1
	(11)	•	लोग चोर होते हैं	(1ਰ)	कुछ लोग ईमानदार व पुजारी होते हैं	1
		, ,	संसार का एक पक्ष उजला है दसरा काला			
		1 1 /		\ 7 /	2 11 1 21 21 11 11 12 11 21 ()	

	(iii) मन्दिर और मसज़िद में जूतियाँ चुराने वालों को कौन ताड़ता है ?					1	
		(क)	पुजारी	(ख)	मनुष्य		
		(ग)	बच्चे	(घ)	कोई नहीं		
	(iv)	कुरान	किस का धार्मिक ग्रंथ है ?	1		1	
		(क)	हिन्दुओं का	(ख)	मुसलमानों का		
		(ग)	ईसाईयों का	(घ)	सिक्खों का		
	(v)	आदम	गीनामा के किव हैं -			1	
		(क)	नज़ीर	(ख)	नज़ीर अकबरवादी		
		(ग)	नज़ीर अकबरावादी	(घ)	उपरोक्त कोइ नहीं		
11.	निम्मा	लिखित	। प्रश्नों में से किन्हीं दो के	उत्तर संक्षेप में तं	t –	2x2.5=5	
	(क)	लेखव	n 'बालकृष्ण' के मुँह पर छ	ाई गोघूलि को श्रे	उ क्यों मानता है ?		
	(碅)	जीवन	। में पोशाक का क्या महत्व [ः]	है ?			
	(ग)	लड़के	की मृत्यु के दूसरे दिन ही	बुढ़िया खरबूजे बं	चने क्यों चली गई?		
	(ঘ)	लेखव	h ने बुढ़िया के दु:ख का अं	दाजा कैसे लगाय	?		
12.	मनुष्य	का स	बसे बड़ा दुर्भाग्य लेखक ने	किसे बताया है 3	गौर क्यों ?	5	
				अथवा			
	पाठ वे	के आध	ार पर बताइए कि शोक के	समय धनी और वि	नेर्धन की दशा में अंतर होता है ?		
13.	निम्नी	लिखित	। गद्यांश को पढ़कर पूछे ग	ाए प्रश्नों के उत्त	र दीजिए -	5	
					ती नौवत आई , पर जो बचपन में धूल में खे		
					त्ता है ? यह साधारण धूल नहीं है, वरन् ते		
		से सिझाई हुई वह मिट्टी है , जिसे देवता पर चढ़ाया है । संसार में ऐसा सुख दुर्लभ है । पसीने से तर बदन पर मिट्टी					
		ऐसे फिसलती है जैसे आदमी कुआँ खोदकर निकला हो । उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं , आराम से हरा होता है अखाड़े में निद्धंद चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विजयी लगाता है । मिट्टी उसके शरीर को बनाती है क्योंकि					
		•			को लेकर संसार की असारता पर बहुत कु		
			-	=	वे सब मिट्टी से ही मिलते हैं ।		
	(1)	अखा	ड़े की मिट्टी की क्या विशेषत	ग है ?		2	
	(2)	गद्यांश	। में किस सुख को दुर्लभ ब	ताया है ?		2	
	(3)	किन	सारतत्वों को जीवन के लिए	् अनिवार्य बताय	गया है ?	1	
				अथवा			

अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करने वाला था । लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैंप पर नहीं जाना चाहता था । इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा अपने प्रयास को छोड़ देना था। वह तुरंत शुरू करना चाहता था और उसने मुझसे पूछा, क्या मैं उसके साथ जाना चाहूँगी ? एक ही दिन में साउथ कोल से चोटी पर जाना और वापस आना बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा । इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था । मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ – साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में आश्वस्त थी ।

	(1) बिना आक्सीजन चढ़ाई के कारण अंगदोरजी की क्या दशा हो जाती थी ?	2
	(2) बचेंद्री को अंगदोरजी के साथ जाने में कौन सी परेशानी हुई ?	2
	(3) वह आश्वस्त क्यों थी ?	1
14.	(क) लाख कोशिश करने पर भी बिगड़ी बात नहीं बनती क्यों ?	2
14.	(ख) एक के साधने से सब कैसे सध जाता है ?	
	(य) एक के तावन ते तब कर्त तव जाता है : (ग) अवध नरेश कौन थे ? उन्हें चित्रकूट क्यों जाना पड़ा ?	1
	(ग) अवव नररा कान य ? उन्हें । पत्रकूट क्या जाना पड़ां ?	2
15.	गिल्लू और लेखिका के घनिष्ट संबंधों को स्पष्ट करें ?	3
	अथवा	
	दोनों भाईयों ने मिलकर कुएँ में नीचे उतरने की क्या युक्ति अपनाई ?	
16.	उनाकोटी का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वह स्थान क्यों प्रसिद्ध है ?	2
	• 4 •	
	खंड-'घ'	
17.	दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखें-	5
	(क) प्रदूषण की समस्या :	
	• भूमिका • विकट समस्या • कारण • निवारण	
	(ख) पुस्तकालय के लाभ :	
	• पुस्तकें : समय का दर्पण • पुस्तकालय का अर्थ	
	• प्रकार • लाभ	
	(ग) सादा जीवन , उच्च विचार :	
	• अर्थ ग्रहण • महत्त्व	
	• विचारों का प्रभाव • चरित्र निर्माण	
18.	मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए चुने जाने पर अपने मित्र को पत्र लिखकर बधाई दीजिए ।	E
10.	माडकल कालज में प्रवरा के लिए युन जान पर जपन नित्र का पत्र लिखकर बवाइ पाजिए। अथवा	5
	अववा अनुशासन का महत्व बताते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखें ।	
	जनुराति । यम महत्य बतात हुए जयम छाट मारू का यत्र तिखा ।	

- o O o -